Contents

शोधप्रबंध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय : "पृष्ठभूमि" - - - - - - - पृ० १ से ४३

१ सामान्य परिचय ;

२ ऐतिहासिक अनुक्रम ;

३ तत्कालीन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :

अ- सामाजिक, आ- आर्थिक

इ- धार्मिक, ई- साहित्यिक परिस्थितियाँ ।

द्वितीय अध्याय : "जीवनी और व्यक्तित्व" पृ० ४४ से ९९

१ जन्म-वर्ष : प्रथम सामग्री ; द्वितीय सामग्री ; निष्कर्ष ;

२ बाल्यकाल ;

३ पारिवारिक जीवन ;

४ राजकीय जीवन ;

५ साहित्यिक जीवन :

अ- संस्कार काल आ- अध्ययन काल

इ- सर्जन काल एवं साहित्य : प्रारंभिक, मध्य और प्रौढ़ काल

ई- लखपतिसिंह द्वारा संचालित व्यापक साहित्यिक प्रवृत्तियाँ ;

६ मृत्यु : आयु ; अंतिम अवस्था ;

७ व्यक्तित्व : वीर ; उदार, गुण-ग्राहक और दानी ; रसिक, विलासी और खर्चीला ; जिज्ञासु और विद्याव्यासंगी ;

कवि, शास्त्र-प्रेमी और संस्थापक ; विरागी
एवं भक्त - शिव-भक्त ;

८ निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : " कृतियों का परिचय " - - - पृ० १०० से १४०

१ कृतियों की संख्या

२ " सुरतरंगिनी " : प्रति-परिचय, प्रामाणिकता, वर्ण्य-विषय ;

३ "मृदंगमोहरा" : "मृदंगमोहरा " के ग्रंथांश की उपलब्धि तथा
परिचय ; प्रामाणिकता ;

४ " रसतरंग " : प्रति-परिचय ; रचनाकाल ; " लखपति-शृंगार "
या " रसतरंग " ; " रसतरंग " का कर्ता ;
विषय-वस्तु ;

५ "लखपति भक्ति : प्रति-परिचय ; रचना का नाम ; प्रतिपाद्य
विलास " विषय ; कथा-सूत्र ;

६ "सदाशिव-ब्याह": प्रति-परिचय ; कुल पद्यसंख्या ; कथा-सूत्र ;

७ लखपतिसिंह की फुटकल रचनाएँ ।

चतुर्थ अध्याय : "लखपति रचित शास्त्रीय ग्रन्थ " पृ०१४१ से १९४

१ " सुरतरंगिनी " : शास्त्रीय आधार ; " संगीत-रत्नाकर "
और " सुरतरंगिनी " में विषय-वस्तुगत
साम्य-वैषम्य ; निष्कर्ष ;
(क) "सुरतरंगिनी " का शास्त्रीय अंश ;
निष्कर्ष ;
(ख) "सुरतरंगिनी" का काव्यात्मक अंश ;
निष्कर्ष ;

२ "रसतरंग" : शास्त्रीय आधार ; "रसतरंग" और "सुंदर शृंगार" का तुलनात्मक अध्ययन ;

३ निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय : "लखपतिसिंह के खण्डकाव्य" पृ० १९५ से २२६

१ "लखपति भक्ति विलास" : संक्षिप्त कथा ; समीक्षा – कथावस्तु, प्रबंध-सौष्ठव, चरित्र-सृष्टि

२ "सदाशिव-ब्याह" : संक्षिप्त कथा ; समीक्षा – कथावस्तु, प्रबंध-सौष्ठव, चरित्र-सृष्टि

३ निष्कर्ष ।

षष्ठ अध्याय : "हिन्दी रीति-काव्य की प्रवृत्तियाँ और लखपतिसिंह का काव्य" : पृ० २२७ से २८९

रीतिकाव्य की प्रवृत्तियाँ : १– शृंगारिकता और २– आचार्यत्व

१ शृंगारिकता : शृंगार रस का स्वरूप और उसका रसराजत्व ;
लखपतिसिंह की शृंगार-भावना ;
अ० संयोग शृंगार : अ–१ सौंदर्य-चेतना और रूप-वर्णन ;
अ–२ रतिक्रीड़ा ;
अ–३ परिहास और विनोद ;
अ–४ उद्दीपन – विभाव-वर्णन ;

आ० वियोग-वर्णन : आ–१ पूर्वराग
आ–२ मान
आ–३ प्रवास

निष्कर्ष ।

२ आचार्यत्व : नायिका-भेद ; इतर काव्य-शास्त्रीय उल्लेख ;
निष्कर्ष ।

सप्तम अध्याय : " लखपतिसिंह की काव्य कला " पृ० २९० से ३४३

अ० चित्रात्मकता :

आ० अप्रस्तुत विधान : १- रूप-साम्य-मूलक अप्रस्तुत विधान ;
२- धर्म-साम्य-मूलक अप्रस्तुत विधान ;
३- प्रभाव-साम्य-मूलक अप्रस्तुत विधान ;
४- संभावनामूलक अलंकार
(क) वस्तूत्प्रेक्षा ;
(ख) फलोत्प्रेक्षा ;
(ग) हेतूत्प्रेक्षा ।
५- उदाहरण अलंकार ;
६- दृष्टांत अलंकार ;
७- शब्दालंकार ।

इ० भाषा : १- शब्द-भंडार : तत्सम शब्द, तद्भव शब्द,
देशज शब्द, विदेशी शब्द, निष्कर्ष ;
२- भाषा-सौष्ठव : शब्द-शक्ति, मुहावरे-
कहावतें, गुण ;
३- पात्रानुकूल भाषा ;
४- निष्कर्ष ।

ई० छंद-योजना : पद्धड़ी, कुंडलिया, भुजंगप्रयात, भुजंगी,
पाधाकुलक, मोतीदाम, त्रिभंगी, कमल,
पद्मावती, वेताल, दंडकला, दोहा और
सवैया ।

निष्कर्ष ।

अष्टम अध्याय : "महाराव लखपतिसिंह की अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ" पृ० ३५४ से ३७४

(एक) लखपतिसिंह के दरबार की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ :

(१) हमीरदान रत्नू

(२) आचार्य कनक कुशल

(३) आचार्य कुँवरकुशल

(४) आचार्य-परंपरा

(दो) "महाराव श्री लखपत जी वृजभाषा काव्यशाला "

(१) सामान्य व्यवस्था

(२) पाठ्यक्रम

(३) परीक्षाविधि

(४) कवि-विद्यार्थी : ब्रह्मानंद, लाल कवि, गोप

(५) कवि-विद्यार्थी-परंपरा

(६) निष्कर्ष

नवम अध्याय : "उपसंहार " - - - - - पृ० ३७५ से ३८७

१ लखपतिसिंह का हिंदी साहित्य में स्थान

२ निष्कर्ष ।

परिशिष्ट पृ० १ से ८

०००